न निकले। एक बार एक व्यक्ति के पास गाय थी, उसके पड़ोसी के पास भैंस थी। गाय कम दूध देती थी, भैंस ज्यादा देती थी। व्यक्ति को ईर्ष्या होती थी। उसने भगवान से बहुत प्रार्थना की – हे प्रभु, इसकी भैंस को मार दो, मुझे बड़ी शान्ति मिलेगी। कुछ समय बाद उसकी गाय मर गई। वह दौड़ा-दौड़ा मन्दिर गया और कहने लगा, भगवान आपको यह भी पता नहीं कि भैंस काली और गाय सफेद होती है। आपने गलती से भैंस के स्थान पर गाय को मार दिया। देखिये तो सही, अज्ञान का पर्दा कितना गहरा है। उसे भगवान की गलती दिख रही है, अपनी नहीं।

अपनी ग़लती देखने के लिए अपने से बातें करो, अपने से कहो – जितनी देर दूसरों के बारे में व्यर्थ सोचने में लगाऊँ, क्यों ना उतनी देर भगवान से प्रेम बढ़ाऊँ? फिर भगवान प्यार करने को कब मिलेगा? प्रभु से प्यार करने में मिठास मिलता है पर व्यर्थ सोचने में तो मन-बुद्धि के रास्ते में कंकर अटकने जैसा अनुभव होता है। भगवान को पाकर भी मन-बुद्धि की चाल उलटी ही रही तो और कौन-सा युग आएगा जिसमें यह सीधी होगी! इसलिए रहम, रहम, हे आत्मन्, स्वयं पर रहम!

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

ऐसे मिली जीवन को नई दिशा

ब्रह्माकुमार नैना बहादुर क्षेत्री, जिला कारागार, तिनसुकिया

मैं गाँव सदिया, शान्तिपुर-तीन नम्बर, जिला तिनसुकिया (असम) का स्थायी निवासी हूँ। खेती मेरी जीविका थी। जेल में आने से पहले मैं भ्रष्ट और पतित था। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के भूत मुझ पर सवार थे। इस कारण समाज की झूठी प्रशंसाओं में मैं झूमता रहा। बढ़ते हुए विकारों के फलस्वरूप मैं मानसिक रूप से कमज़ोर हो गया और एक दिन मेरे द्वारा पत्नी की हत्या हो गई। मुझे जेल भेज दिया गया। मैं अपनी ज़िन्दगी का सबसे सौभाग्यशाली दिन उसे मानता हूँ जब मुझे परमात्मा का परिचय और उनके धरती पर अवतरित होने का शुभ-समाचार इस जेल में प्राप्त हुआ। दुख ही समाप्त हो गए। ज्ञान में पहले दिन से ही मेरा अटूट निश्चय हो गया। मैं पहले किसी भी धार्मिक गतिविधि से परे था। कहा जाता है कि गीली मिट्टी को किसी भी तरह ढाल सकते हैं, वही मेरे साथ हुआ। प्रभु ने मुझे जेल में ढूँढ लिया और मैं इस रास्ते पर पूरी दृढ़ता व लगन से लग गया। जेल में सेवार्थ आने वाले ब्रह्माकुमार भाई व बहनों के मन, वचन, कर्म की श्रेष्ठता व नि:स्वार्थ सेवा की छाप मेरे ऊपर ऐसी पड़ी कि मेरे मन, बुद्धि, संस्कार ही बदल गए। अज्ञानतावश पले हुए विकार स्वत: ही मेरे से दूर हो गए। शिवबाबा की याद से अब व्यर्थ पर मैंने काफी काबू पा लिया है। अब ड्रामानुसार आई हुई कोई भी परिस्थिति मुझे दुखी नहीं करती। शिवबाबा की सच्ची याद व साथ से हम आत्माओं को बेहद की प्राप्ति हो सकती है, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। मैंने ज्ञान में आने से यह अनुभव किया है कि भगवान हमसे दूर नहीं है। हम बाबा के सपूत बच्चे बनकर रहें और मनसा, वाचा, कर्मणा पवित्र बनकर श्रीमत पर चलते हुए शिवबाबा की याद में रहें तो माया अर्थात् पाँच विकार हमें परेशान नहीं कर सकते।

मुझे अनुभव हो रहा है कि मैं ईश्वरीय परिवार का ही हूँ। मैं चारों विषयों – ज्ञान, योग, धारणा, सेवा में निपुण हो रहा हूँ और अमृतवेले तीन बजे से चार बजे तक योग में रहता हूँ। ऐसा लगता है, शिवबाबा हमारी अच्छी तरह गुप्त पालना करते रहते हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत आगे जाने का मेरा लक्ष्य है। अब तो केवल ईश्वरीय ज्ञान ही मेरी ज़िन्दगी, मेरा श्वास और मेरा उद्देश्य है। उसके बिना तो मैं जीने की बात सोच भी नहीं सकता। अब तो दिल यही गाता है – 'हमने प्यार वो पाया जो दुनिया पा नहीं सकती।' ❖